मैथिली प्रतिष्ठा (H)

Part - II

Paper - IV

Page No.:

Date : 27.05.2020

Lecture No - 33

Unit - 8

डॉ. अरविन्द झा

सहायक प्राध्यापक

मैथिली विभाग

मारवाड़ी महाविद्यालय

दरभंगा

मो. - 9040201409

भाषा - विज्ञान

भाषोत्पत्तिक सिद्धान्त (भाग - 2)

(VIII) अनुकरण (बाउ - बाउ) सिद्धान्त — बाउ - बाउ थिक भों - भोंक अंग्रेजी रूपान्तर। एहि सिद्धान्तक नाम मैक्समूलर विनोदक रूपमे रखलनि। एहि सिद्धान्तक अनुसार वस्तु सभक नामकरण ओहि सँ उत्पन्न भेनिहार ध्वनिक आधार पर भेल अछि। अर्थात्, जाहि वस्तु सँ जेहन ध्वनि होइत सुनल गेल, ओकर नाम ओकरहि अनुकरण पर राखि देल गेल। जेना - काँ - काँ रटए बला केँ कौआ, कू - कू कहनिहार केँ कोकिल, झर - झर करैत बला जल प्रवाह केँ निर्झर वा झरना इत्यादि।

(IX) इंगित सिद्धान्त - एहि सिद्धान्तक अनुसार मानव अपन अंग किंवा आंगिक चेष्टाहिकेँ वाणी द्वारा अनुकरण कयलक एवं ओहि सँ भाषोत्पत्ति भेल, एहन धारणा अछि। जेना - पानि पीबए काल हरक

बेरि-बेरि स्मरण किया इशारे सिखलनि कें पा-पा सदृश ध्वनि भेल आ ओं पा क अर्थ पिता मानि लेल गेल आ एहि ना अनेक शब्दक आरम्भ भेल।

(X) सम्पर्क सिद्धान्त - एहि सिद्धान्त के अत्यन्त सम्मान एवं मनोवैज्ञानिक आधार पर भाषाक उत्पत्तिक कल्पना कएल गेल अछि। एकर प्रवर्तक मनोवैज्ञानिक रेवज मानल जाइत छथि जिनकर कथन अछि जे मनुष्य अपन सम्पर्कक सहज प्रवृत्तिक अभिव्यक्तिक हेतु एवं अपन भावना के समाजक अन्य सदस्य के पर अभिव्यक्ति करबाक निमित्त कतेको संकेतक सहारा लेल जाइछ जे उहि सँ उच्चारित ध्वनि संकेत सहायक सम्पर्कक प्रयोजन भाषाक जन्म देलक। जेना-जेना एहि प्रयोजन मे वृद्धि होइत गेल, तेना-तेना भाषाक विकास सेहो होइत गेल।

(XI) टा-टा सिद्धान्त - ई सिद्धान्त अनुकरणमूलक सिद्धान्त एवं इंगित सिद्धान्त सँ बहुत मिलैत-जुलैत अछि। ई सिद्धान्त एहि बात पर आधारित छैक जे आदिम मनुष्य काज करैत काल ज्ञात-अज्ञात उच्चारण-अवयव सँ काज करयबला अवयवक गतिक अनुकरण करैत छल एवं एहि अनुकरण मे किछु ध्वनि एवं ध्वनि संयोग सँ शब्दक उच्चारण भए जाइत छल। एहि ध्वनि एवं शब्द सँ क्रमागत भाषाक विकास भेल।

Page No.:
Date: / /

(XII) स्वीटक विचार- प्रसिद्ध
भाषा वैज्ञानिक स्वीट भाषोत्पत्तिक समबन्ध मे विकासवादक समन्वय सिद्धान्त अन्यथा छैक सेहो कहलनि अछि। हुनक विचार अछि जे भाषाक आरम्भक समबन्ध मे विकासवाद सँ मान्य अछि, संगहि अनुकरण, अनुरणन- मूलकतावाद, भावावेश। भिव्यक्तिवाद, प्रतीकवाद आदिक सेहो संयोग कयल अछि विचारे भाषाक शब्दावली तीन रूपक थिक :

(i) अनुकरण एवं अनुरणनात्मक
(ii) मनोभावाभिव्यंजक
(iii) प्रतीकात्मक

(ii) परोक्ष मार्ग

भाषोत्पत्तिक अध्ययन 'परोक्ष मार्ग' सँ सेहो कयल जाइत छै। जेस्पर्सन एहि पद्धतिक विशेष महत्व देने छथि। हिनका अनुसारे भाषाक मूल तक पहुँचबाक हेतु तीन तत्वक अध्ययन आवश्यक होइत छै-

(i) बच्चाक भाषा मे मूल भाषाक प्रवृत्तिक अन्वेषण - बच्चा मे भाषाक शक्ति नहि होइत छै। ओ प्राकृतिक रीतिसँ अपन उद्गार के अभिव्यक्त करैत अछि। एहि हेतु ओ भाषा के प्रारंभिक रूप अपनबैत अछि ओहि मे भाषाक मौलिक रूपक दिग्दर्शन होइत छै।

(ii) प्राचीन आदिवासी समाज भाषाक अनुसंधान ओ अध्ययन - किछु विद्वान

समग्र जातिक अध्ययन क माध्यमे प्रारम्भिक प्रकृतिक मानव विषय मे जानय चाहैत छथि। ओ लोकनि एहि कार्य हेतु अफ्रीका एवं अमेरिका आदि जातिक अध्ययन कयल आ निष्कर्ष पर पहुँचलाह जे ओतय मानव कैक हजार वर्ष पूर्व धरि हुनि जे रहय अछि।

(2) भाषाक ऐतिहासिक अध्ययन- एहि विधि द्वारा भाषाक आदि स्वरूपक अध्ययन क प्रयास अपेक्षाकृत अधिक सफल मानल जा सकैत अछि। एहि विधि सँ अध्ययन करय वला भाषाक वर्तमान साहित्यक रूपके लए ओकर ऐतिहासिक स्वरूपक अध्ययन करैत जाइत एवं ओकर प्राचीनतम स्वरूप तक पहुँचि जाइत।

एहि प्रकारे भाषोत्पत्तिक विषयमे कतेको मत प्रचलित अछि, किन्तु एखन धरि एकर कोनो निश्चित आधार नहि भेटल अछि।

डॉ॰ अरविन्द झा
मो॰- ८०८०२०९८०५